International Journal of Applied Research 2020; 6(8): 379-380

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2020; 6(8): 379-380
www.allresearchjournal.com
Received: 16-06-2020
Accepted: 19-07-2020

सोनू कुमार झा
हरिनगर, पो.– रघुनी देहट, जिला– मधुबनी, बिहार, भारत

Corresponding Author:
सोनू कुमार झा
हरिनगर, पो.– रघुनी देहट, जिला– मधुबनी, बिहार, भारत

वैचारिक स्तर पर मजगूत कविता–संग्रहः घाम होयबाक अकुलाहटि

सोनू कुमार झा

प्रस्तावना

एखनुक समयमे मैथिली कविता अपन प्राचीन छान–पगहाकेँ तोड़ि चुकल अछि। छन्दक बन्हनसँ मुक्त भऽ गेल अछि। अलंकारक अटकरसँ दूर भऽ गेल अछि। नब कविता, नब ढंगे नब बात कहबाक सामर्थ्य रखैत अछि। आजुक कविता मात्रा प्रेमक गप्प करैत अछि। आजुक कविता मात्रा समस्या नहि गनबैत अछि, अपितु ओकर समाधान सेहो सुझबैत अछि। आजुक कविता वैचारिक स्तर पर मजगूत भेल अछि।

वर्तमान समयमे कवि लोकनिक भीड़ लागि गेल अछि। सभ कियो पाँती जोड़ि–जोड़िकऽ कवि बनबाक लौल पोसने छथि। हुनका लोकनिकेँ कविता बाँचबाक लेल मंच सेहो भेटि जाइत छनि। कविताक अपन संग्रह सेहो छपबा लैत छथि, मुदा पाठक पर तकर कतेक प्रभाव पड़ैत अछि? पाठक ओकरा हलसिकऽ लैत अछि, अथवा ओ संग्रह लेखककेँ मात्रा कविक पाँतमे बैसबैत अछि? मुदा एहनो समयमे किछु एहन कवि अयलाह जिनक काव्य–प्रतिभा मैथिली साहित्य जगतकेँ समृद्ध कयलक अछि। ओहि किछु कविमे एक गोट युवा नाम उभरैत अछि 'मैथिल प्रशान्त'।

'मैथिल प्रशान्त' जिनक मूल नाम प्रशान्त कुमार झा छनि। पेशासँ शिक्षक छथि। शिक्षण जीवन कर्म छनि। कर्म कविता लेखन सेहो छनि। जहिना ई जीवनमे निस्पक्ष छथि, तहिना कवितामे सेहो देखाइत छथि। जहिना ई स्वयं स्पष्टवादी छथि, तहिना हिनक कविता सेहो स्पष्ट बात कहैत अछि।

कहियो 'मिथिला सृजन'क पहिल छाप प्रशान्त, आइ बेछप नाम मैथिल प्रशान्त भऽ गेल छथि। मैथिल प्रशान्त नीक गीतकार छथि। हिनक गीत सभ मिथिलाक प्रसिद्ध गायकक अतिरिक्त सीमा पार नेपालक मैथिली गायक लोकनि द्वारा सेहो गाओल जाइत अछि। दुनू कातक श्रोता लोकनि द्वारा प्रशंसित होइत अछि। कहियो काल ई कथामे सेहो कलम भाँजि लैत छथि, मुदा एकरा सभक अतिरिक्त प्रशान्त सुच्चा कवि छथि। हिनक कविताक धार तेज अछि। एकदम पिजायल। चमचमाइत। अद्यावधि हिनक तीन गोट कविता–संग्रहμ अखरा चान, समयक धाह पर आ घाम होयबाक अकुलाहटि छनि, मुदा एतय हम 'घाम होयबाक अकुलाहटि' पर गप्प करब।

घाम होयबाक अकुलाहटि जेना नामहिसँ स्पष्ट भऽ जाइत अछिμ आउल–बाउल भेल मोन। वा एना कही कोनो वेदनासँ छटपटाइत, औनाइत जे कखन बाहर भऽ निसाँस छोड़ी। जेना साँप अपन केचुआ छोड़ैत काल कसमसाइत अछि तहिना मजदूरक दुर्दशा, सत्ताक भभटपन, स्त्राी पर होइत सरेआम अत्याचार आ ताहि पर होइत देखावटी विमर्शसँ प्रशान्तक मोन छटपटा जाइत छनि। इएह छटपटाहटि हुनक शब्द बनि कविता बनि गेल अछि। एहि संग्रहमे छियासठि गोट कविता अछि। जाहिमे किछु स्त्राी विमर्शक गप्प करैत अछि तँ किछु राजनीतिक गप्प करैत अछि। किछु सत्ता द्वारा शासन तन्त्राक अपहरणक बात कहैत अछि तँ किछु कविता आम जन–मजदूरक गप्प करैत अछि।

एहि संग्रहक पहिल कविता अछि 'घाम होयबाक अकुलाहटि'। एहि कवितामे कविक कहबाक आशय छनि जे सभ युगमे समय–समय पर नव परिवर्तन भेल अछि। से परिवर्तन भले तलवारक धारेसँ भेल हो, मुदा तलवार पर शान कवि अपन लेखनी द्वारा चढ़ौने छथि। परंच समयक संग कवि लोकनि ओहि शानकेँ सत्ताक जयगानमे बदलि लेलाह। ओ बिसरि गेलाह अपन निज स्वभाव। हुनका लिखबाक छनि श्रमिक लेल, हुनका लिखबाक छनि जन–मजदूरक उत्थानक लेल, जकर शोणितसँ पटल खेतक उपजल अनाजसँ सत्ताक देह पुष्ट भेल अछि। तँ एहिठाम कवि कहैत छथि जे हमरा ईश्वरक गान नहि लिखबाक अछि ने सत्ताधारीक जयगान। ओ लिखि देमय चाहैत छथि ओकर व्यथा जकर देहसँ शोणित घाम बनि बहि जयबाक लेल आउल–बाउल भेल अछिμ 'हमरा लिखबाक अछि शोणितक घाम होयबाक अकुलाहटि!' [1]

'संघर्ष जीवन थिक'। एहि उक्तिकेँ प्रमाणित करैत अछि कविता 'जीवन आ मृत्युक माँझ' वास्तवमे जीवनमे बहुतो रास झंझटि रहैत छैक। सदति नव संघर्ष होइते रहैत छैक। एकरा सभक अछैतो जीवन सत्य थिक। मृत्यु सेहो निश्चिते अछि। तखन डरब कथीसँ।

यावत् जीवन थिक, शानसँ जीयब कविक उद्देश्य अछि, जहिना रातुक बाद भोर होइत अछि तहिना जीवनमे दुःखक बाद सुख सेहो अबिते अछि। तेँ तँ कवि कहैत छथिμ 'मारिते रास घुरछीक रहितहुँ आसान थिक जीवन, मृत्युक अपेक्षा।' [2] आजुक एहि विकासवादी युगमे कियो सुख–चैनसँ नहि अछि। कतहु शान्ति नहि छैक। उपनिवेशवादक अन्हरमे समूचा विश्व अशान्त भऽ गेल अछि। घर–घरसँ जेना शान्ति पड़ा गेल अछि। व्यक्ति–व्यक्ति अशान्त अछि। असलमे शान्ति कोनो वस्तु नहि जकरा घरक शो–केसमे बंद कऽ कऽ राखल जाय। शान्ति कोनो नवयुवती नहि जकर अपहरण कऽ लेल गेल अछि। शान्ति तँ मानव हृदयक स्पन्दनमे बसैत अछि। 'शान्तिक अपहरण'मे कवि एहि बातकेँ नीक जकाँ बुझौलनि अछि। कवि एहि कवितामे आमजनसँ आग्रह करैत कहैत छथिμ 'हम भरोसक दीप लऽ शान्तिकेँ बियाहि आनऽ लेल चललहुँ अछि, बरियाती चलबाक लेल हकार दैत छी, अहाँ आयब ने...!' [3]

अदौकालसँ लऽ कऽ आइ धरि स्त्रीक जीवन कतेक बदलल अछि? ओकर जीवन तँ साफ–स्वच्छ निर्मल जल जकाँ छल, आइयो अछि। ओहि पानिमे जेहन रंग घोरि देल जाय तेहने भऽ जायत। जाहि बासनमे धऽ देल जाय तकरे आकार धऽ लेत। ई स्त्रीक निजधर्म अछि। मुदा ताहि कारणे समाज आइयो ओकर स्वतन्त्रा पहिचान कहाँ बनऽ देलकैक अछि। तकरे उद्भाषित करैत अछि कविताμ 'स्त्रीत्व'। प्रेमकेँ कागत पर परिभाषित नहि कयल जा सकैत अछि। ने चिकरि–चिकरिकऽ दोसरकेँ सुनायल जा सकैत अछि। प्रेम थिक हृदयकेँ हिलोर। जकरा हृदयमे उठैत अछि, बस ओकर हृदय धरि पहुँचि जाइत अछि। प्रेमेसँ संसार बसल अछि। प्रेम माय–बेटामे होइत अछि, भाइ–बहिनमे होइत अछि, पितासँ होइत अछि, भाइसँ होइत अछि, मित्रासँ होइत अछि, मुदा जीवन गाड़ीक जे दू पहिया पति–पत्नी अछि, एकर दुनूक प्रेम निश्छल, निर्विकार होइत अछि। जतऽ जेठक पात हो, कि साओनक फुहार। कातिकक उसठ हो कि फागुनक अल्हड़ बसात। सभ समयमे एक रंग नेह बाँटैत अछि। एकटा कम आमदनीबला व्यक्ति आ ओकर पत्नीक प्रेमक प्रतिबिम्ब अछिμ 'हम, अहाँ आ अपन ई जिनगी।'

आशा आ विश्वासेसँ जिनगी जीयल जाइत अछि। जाहिठाम चारूभर गुजगुज अन्हार पसरल अछि। झपट्टा मारबाक लेल गिद्ध तैयार बैसल अछि। नहि जानि, कखन जाति–धर्मक नाम पर अगराही लगतैक आ झरका देत मानवताकेँ। ताहिठाम कवि हुँकार भरैत अछिμ हम मनुख छी, हम चुपचाप नहि बैसि सकैत छी, बिनु लड़ने हारि नहि मानि सकैत छी। एहि विचारकेँ व्यक्त करैत कवि 'त्याग पत्रा' कवितामे मनुष्यकेँ अपन भीतरक विचारसँ लड़बाक आग्रह करैत छथि। जाहिसँ समाप्त भऽ जायत राग–द्वेष–ईर्ष्या। ओहिसँ बहरायत आशा। जे जोड़त मनुष्यसँ मनुष्यकेँ। 'स्पन्दन अछि तँ मनुक्ख नहि तँ काठ छी।' [4] ई उक्ति एकटा कवितासँ लेल गेल अछि। से ठीके, जँ मनुष्य मनुष्यक दुःखसँ दुःखी नहि हो, जँ एक–दोसराक खुशीमे सहयोगी नहि हो तँ काठ आ मनुष्यमे कोनो अन्तर शेष नहि रहि जाइत अछि।

एहि संग्रहमे स्त्री विमर्श पर सेहो कएकटा कविता अछि। जाहिमे किछु कविता हृदयक तारकेँ झनझना दैत अछि। स्त्रीकेँ मात्रा भोग्या बुझैत अछि आइयो हमर समाज। जखन जतऽ जतेक मोन हुअए ओकर मर्दन कऽ दैत अछि। लतखुर्दनि कऽ दैत अछि। जखन कि हमरा लोकनि अर्द्धनारीश्वरक पूजक छी। अर्द्धनारीश्वर माने हमरे देहक आधा भाग। माने पुरुषक बामा भागमे स्त्री तत्व अछि। तखन अपने शरीरक एक भागकेँ स्वयं नछोड़ब विक्षिप्त मानसिकते भऽ सकैत अछि। दोसर, ओकर सभसँ पैघ कारण अछि आइयो स्त्री स्वयंकेँ नहि चीन्हि पबैत छथि। हुनका लोकनिकेँ जगबैत 'बामा कात' कवितामे कवि कहैत छथिμ 'नहि जानि कहिया अपना लेल जीयत हमर बामा कात/युवतीसँ स्त्री हएब टा तऽ नहि जीवन थिक।' [5]

तहिना 'अँइठार पर औन्हल राखल प्रेम'मे सेहो स्त्रीये विमर्शक गप्प अछि। वास्तवमे स्त्री लोकनि जेना प्रतिवाद नामक शब्द सिखनहि नहि छथि। ओ लोकनि अपन स्व–परिचिति किएक ने बनौलनि। किएक रामक संग सीताक नाम अबैत अछि। सीताक फराक अस्तित्व किएक नहि। बस सभ दिन नऽब–नऽब नाम भेटैत गेल। कहियो बेटी, बहिन तऽ कहियो पत्नी फेर माय। आर बहुतो रास आन–आन पदवी। सभक लेल परसैत रहलीह नेह स्त्री। मात्रा अपन निजत्वकेँ खपटा बनाकऽμ 'स्त्री सुलभ संस्कारक पालनमे, अहाँ किछु नहि अरजि सकलहुँ अपना लेल।' [6]

भारतीय राजनीतिकेँ देखार करैत अछि 'सुग्गा' कविता। जहिना पिंजड़ामे बन्द सुग्गा ओतबे बजैत अछि, जतबे ओकर मालिक ओकरा रटबैत छैक। ठीक तहिना भारतीय प्रशासन ओतबे करैत अछि, जतबे राजनेता ओकरासँ करबैत अछि। पंख रहितो ओ फरफरा नहि सकैत अछि। कहियो एहि देशमे शाक्तिकेँ अपन लाठी पर टेकिकऽ साम्राज्यवादक जड़िकेँ कोड़िकऽ ढाहि देलक। आइ ओहि बुढ़ियाक ओ लाठी, जकरा पइर लगलै सएह ओहि पर अपन शान चढ़ा निमुधन जनताक शोणित पीबाक लेल भाँजि रहल अछि। गाँधीजी पर लिखल गेल 'खौड़कीबला बुढ़बा' नीक शब्द चित्रा अछि।

एहि तरहेँ जखन एहि संग्रहक कविता सभ पर विचार करैत छी, तँ सभ कविता वर्तमान परिस्थितिक सजीव चित्राण करबामे समर्थ अछि। एहि छोट सन आलेखमे सभ कविता पर गप्प नहि कयल जा सकैत अछि। हालाँकि संग्रहमे बहुत रास त्रुटि सभ सेहो अछि। लगैत अछि संग्रह निकालबाक लेल कवि कनेक अगुता गेलाह। जँ संग्रहकेँ कनेक गम्भीरतासँ देखल जाइत तँ शब्दक अँकड़ा जे आँखिसँ टकराइत अछि से हटि गेल रहैत। संग्रह साफ–सुथरा अबैत। टंकनक अशुद्धिकेँ दूर कयल जा सकैत छल।

मुदा, हम एतबा अवश्य कहि सकैत छी जे नऽब तूरक कविमे मैथिल प्रशान्तक कविता अपन एकटा अलग पहिचान बनाओत, जाहिसँ मैथिली कविताक भण्डार पुष्ट होइत जायत।

वर्तमान समयमे विश्वक समस्त भाषा–साहित्यमे एखन स्त्री विमर्श चलैत अछि। मैथिली साहित्यमे सेहो भऽ रहल अछि। एहिठाम मैथिल प्रशान्तक स्त्री विमर्शक कविताक ई पाँती कतेको स्त्री विमर्श पर बहस करयबलाक टीक धरबाक सामर्थ्य रखैत अछिμ

'स्त्रीकेँ बुझब भोग्या
आ
तखन स्त्री विमर्श पर लिखब कविता
कविता नहि थिक भाइ
ई
फेकिकऽ अपनहि थूक चाटब थिक।' [7]

संदर्भ संकेत

1. 9
2. 12
3. 19
4. 42
5. 96
6. 98
7. 101